# भारतीय नारी अतीत से वर्तमान तक

## डॉ. आशा बजाज

## एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्स, यमुनानगर ।

भारत विश्व का एक प्राचीन देश एवं जीवित राष्ट्र है । यह सत्य है कि किसी भी प्राचीन सभ्यताओं में नारी को इतना उच्चतम सम्मान, गौरव नहीं दिया गया, जितना कि भारत ने। नारी अपने विभिन्न रूपों जैसे मां, पत्नी, बहिन तथा पुत्री के रूप में हमेशा श्रद्धा की पात्र रही हैं । अगर हम विश्लेषण करें तो अतीत से वर्तमान तक भारत के ऋषियों–मुनियों ने, लेखकों ने उसे बहुत पवित्र कहा है ।

### विभिन्न रूपों में भारतीय नारी

भारत में नारी के मातृत्व को हमेशा पूजनीय माना गया है और अगर देखा जाए तो ईश्वर के बाद मां को स्थान दिया गया है । अथर्ववेद में भूमि को माता कहा गया है । महाभारत में सभी गुरुजनों में माता को गुरु, पुराणों में मां को परम गुरु माना है । स्वामी रामकृष्ण परमहंस कहते थे, 'हे भगवान में किस नाम से आपको पुकारू क्योंकि मानव के शब्दकोश में मां से बढ़कर कोई दूसरा पवित्र शब्द नहीं है इसलिए मैं बच्चे की तरह आपको मां कहकर पुकारता हूं ।'

स्वामी विवेकानन्द ने पाश्चात्य तथा भारत में नारीत्व में अन्तर बताया कि हम तो छोटी सी लड़की को भी मां कहते हैं जबकि पश्चिम में स्त्री पत्नी है, पश्चिम में यदि उसे मां कहें तो वह दहल उठती हैं ।

अगर हम विवाह की बात करें तो विश्व में विवाह को इतना महत्व कहीं नहीं दिया गया है जितना भारत में । क्योंकि भारत में इसे एक महान यज्ञ माना गया है और इसे प्रसिद्ध 16 संस्कारों में से 13वां संस्कार माना गया है।

श्री शंकराचार्य ने लिखा है, 'हिन्दू विवाह आध्यात्मिक तथा सभी तरह की उन्नति का एक प्रधान साधन है । इसके द्वारा पति–पत्नी जन्म–जन्मातंर, युग–युगान्तर तक एक पवित्र सूत्र में बंधे होते हैं ।' यदि नारी की स्थिति को विवाह संस्कार के मापदण्ड से देखें तो विश्व में किसी भी देश से तुलना करने पर भारतीय नारी की दशा सबसे अच्छी है ।

### विभिन्न युगों में नारी की स्थिति

वैदिक काल में नारी की स्थिति सर्वोत्तम थी, स्त्री पुरूष के सम्बन्ध 'सखा' भाव के होते थे । ऋग्वेद में उन दोनों को 'दम्पत्ति' अर्थात् घर की संयुक्त स्वामी कहा, विधवा विवाह होते थे । अनेक नारियां विदुषी थी जैसे घोषा, अपाला, लोपमुद्रा आदि । लेकिन यह स्थिति हमेशा एक सी नहीं रही ।

बदलती हुई परिस्थितियों में नारी की दशा में अन्तर आता गया । पुरूष तथा स्त्री में सखा भाव के स्थान पर पुरूष का प्रभाव ज्यादा बढ़ता गया । शिक्षा के क्षेत्र में नारी शिक्षा का दायरा धीरे–धीरे सीमित हो गया । लेकिन कई नारियां दार्शनिक तथा बहुत विदुषी थी जैसे– मैत्रेयी, गार्गी ।

महाकाव्य काल में नारी की दशा गिरती गई । विवाह की आयु कम होने तथा शिक्षा के क्षेत्र में कमी से पति का स्थान देवता की तरह होता गया । मनु ने भारत को एक सांस्कृतिक, बलशाली तथा नैतिक राष्ट्र बनाए रखने के लिए कुछ कठोर नियम भी बनाये । उदाहरणतया विद्वान व्यक्ति को अकेले में अपनी माता, बहिन या पुत्री से न मिलने की बात की है ।

छठी शताब्दी ई.पू. से भारत में अनेक विदेशी हमले हुए जिससे काफी जन तथा धन की हानि हुई । इनमें ईरानी, यूनानी, शक, कुषाण, रण आक्रमण प्रमुख थे । जिसने नारी के जीवन को प्रभावित किया । इससे समाज में सतीप्रथा को महत्व मिला, पुर्न–विवाह बन्द हो गये । विधवा विवाह अक्सर खत्म हो गये तथा विवाह की उम्र कम हो गई । मुस्लिम आक्रमणों के बाद बहुत सी बुरी प्रथाएं जैसे पर्दाप्रथा का जोर बढ़ा । बहुविवाह, बाल विधवाओं की संख्या बढ़ी। आंठवी शताब्दी में विधवाओं के मुण्डन का भी प्रचलन हो गया । हिन्दू स्त्रियों को मुसलमानों के घरों, में काम करना पड़ता था । तुर्की शासन में लाखों स्त्रियां तथा बच्चों को मुसलमान बनाकर

दासों के रूप में बेच दिया गया । कुछ इतिहासकारों ने इन कुप्रथाओं से बचने के लिए सती एवं जौहर प्रथा का विस्तार से वर्णन किया है । लेकिन हिन्दुओं में अभी भी तलाक प्रथा न थी जो मुसलमानों मे एक आम बात थी ।

राजपूतों में स्त्रियों खासकर माताओं को विशेष सम्मान दिया जाता था । राजा अपने जन्मदिन पर अपनी माता के दर्शन के लिए जाता था । इतिहास में कई ऐसे उदाहरण है जैसे गुरू गोबिन्द सिंह जी की मां गुजरी तथा शिवाजी की मां जीजाबाई अपने मातृत्व के लिए प्रसि, है ।

ब्रिटिश प्रशासन जो 1857 से 1947 ई0 तक रहा इस काल में नारी की दशा दयनीय थी । कन्या हत्या, बाल विवाह, पर्दाप्रथा प्रचलित थी इससे अशिक्षा तथा अज्ञानता बढ़ी । 19वीं शताब्दी में बंगाल तथा मिथिला के ब्राह्मणों में बहुविवाह की प्रथा अधिक थी । सतीप्रथा मुख्यतः राजपूताना तथा बंगाल में प्रचलित थी । कई जगह उनके सती स्थान पर सती स्थल भी बनवाये जाते थे । सम्राट अकबर, सिखगुरू अमरदास तथा मराठा पेशवाओं ने इसे रोकने के लिए प्रयत्न किये थे ।

## अन्य धर्मी तथा पाश्चात्य जगत में नारी की दशा

ईसाइयत, इस्लाम अथवा जेंद अवेस्ता में नारी की प्रारम्भिक अवस्था का वर्णन बडा घृणास्पद किया गया है । पवित्र वाइबल में सृष्टि की उत्पत्ति परमेश्वर द्वारा सात दिन में बतलाई गई है । मानव की उत्पत्ति का वर्णन परमेश्वर ने अदन देश में अपने द्वारा बनाये आदम से बताया है जिसमें आदम की एक पसली से नारी का जन्म माना है और तभी आदम ने कहा, 'यह मेरी हड्डियों का हड्डी और मांस का मांस है ।' इसका नाम वूमैन (नारी) होगा, क्योंकि यह मैन से निकली है । तभी से हौव्वा का जन्म हुआ । परन्तु अदन के बगीचें से एक वर्जित वृक्ष से फल तोड़कर खाने से उन दोनों को वहां से निष्कासित कर दिया तथा मानव की उत्पत्ति हुई । अर्थात् मानव की उत्पत्ति पाप से हुई तथा सृष्टि बनी ।

स्त्रियों के बारे में न केवल वाइबल में बल्कि यूनानी नाटककार ने लिखा है, स्त्रियां अच्छे काम करने में तो वाध्य हैं किन्तु सब प्रकार की बुराई करने में चतुर है । अन्य धर्मों में भी जैसे पारसी धर्म में पति की अवहेलना करने वाली स्त्री को 'डायन' कहा गया है । चीन में स्त्रियों पर आयु के अनुसार पिता, पति और पुत्र के नियन्त्रण में रखना जरूरी मानते हैं ।

मध्यकाल में यूरोप के अनेक साहित्यकारों ने अपनी मां को बड़ी निम्न स्तर की गालियां दी कि वह उसे पाप के संसार में लाने की दोषी हैं । इस काल में महिलाओं का मनमाने ढंग से दुरूपयोग किया गया । मुस्लिम स्त्री को पति की खेती और जायदाद कहा गया ।

आधुनिक काल में यूरोप तथा अमेरिका में महिलाओं की दशा कष्टकारक तथा शोचनीय है । स्त्रियों को किसी प्रकार के धार्मिक कार्यों को करने का अधिकार नहीं है जबकि भारत में सहधर्मिनी के बिना कोई भी धार्मिक कार्य पूरा नहीं होता ।

## भारतीय आजादी के बाद नारी

सन् 1947 में अंग्रेजों के भारत से जाने तथा पाकिस्तान में वहां के नारी समाज को प्रचलित बहुपत्नी प्रथा से अपने सम्मान की रक्षा के लिए शुरू से ही संघर्ष करना पड़ा । इसके अलावा शिक्षा का अधिकार, संविधान के अनुसार वोट डालने तथा चुनाव में खड़े होने का अधिकार मिला । कन्या के विवाह की आयु न्यूनतम से बढ़ाकर 18 वर्ष कर दी गई, सती प्रथा खत्म हो गई । अनमेल विवाह प्रायः खत्म हो गये । अब महिलाएं उच्च शिक्षा ही नहीं उच्चतम सरकारी नौकरी के लिए चुनी जाने लगी तथा प्रतियोगिता में आगे आई ।

स्वतन्त्र भारत का संविधान समाज के प्रत्येक क्षेत्र में महिला और पुरुष दोनों को बराबर के अधिकार प्रदान करता है और यही कारण है कि आजादी के बाद स्त्रियां शिक्षा तथा रोजगार के समान अवसर मिलते ही पुरुषों के साथ व उससे आगे हैं । उन्होंनें हर क्षेत्र में चाहे वो विज्ञान हो, कला का क्षेत्र हो, खेल का मैदान हो या फिर युद्ध का क्षेत्र हो सभी में महिलाओं का पूरा समर्पण रहा है । राजनैतिक क्षेत्र में चाहे वो प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और राष्ट्रपति के पदों पर काम करके समाज के निर्माण में पूरा सहयोग दिया है। सानिया मिर्जा का विश्वस्तरीय टैनिस खेलना, कल्पना चावला का अन्तरिक्ष में उड़ान एवं श्रीमति प्रतिभा पाटिल का राष्ट्रपति के पद पर बैठना, कई ऐसी ऐतिहासिक घटनाएं हैं जो विश्व के लिए एक आदर्श कीर्तिमान स्थापित करती हैं । धरना प्रदर्शन करती हुई गांव की महिलाएं भी अपने अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक हो गई है लेकिन भारतीय समाज की

दलित नारी पढ़ी–लिखी न होने के कारण ज्यादा दुख सहन कर रही है, उनका मुख्य कारण है – जाति, स्त्री और फिर गरीबी । आज तक स्त्री आन्दोलन व स्त्री समूहों ने इन सब बातों को कभी नहीं उठाया ।

लेकिन 1975 के वर्ष को 'महिलावर्ष' घोषित करने के साथ ही महिला संगठनों के उत्थान तथा नारी विकास की कहानी के रूप में याद किया जाने वाला वर्ष है। सबसे हैरानी ये है कि देश के दो विकसित राज्यों पंजाब और हरियाणा में कन्या भ्रूण हत्याओं की संख्या, दूसरे राज्यों की तुलना में अधिक रही है । हालांकि कठोर नियम एवं सख्त निर्णयों के कारण दहेज हत्या व बलात्कार की घटनाओं में कमी आई है लेकिन बड़े–बड़े शहरों में वेश्यावृत्ति अभी भी बहुत है । शिक्षित एवं सम्पन्न समाज में दहेज का कानून बनने के बावजूद भी विवाहित महिलाओं को जलाया जा रहा है । सख्त हिंसा कानून के बावजूद देश के हर क्षेत्र में चाहे वो विकसित हैं या अविकसित महिलाएं हिंसा का शिकार बनती है। नारी विकास के इन विभिन्न विरोधों के कारण इनका क्या समाधान है यह खोजना जरूरी है ।

आज के युग में जिसमें कम्पयूटर, इंटरनेट और थ्री जी मोबाइल पूरे जोरों पर है । भारतीय नारी को फैशन तथा ग्लेमर की दुनिया को समझना होगा । नशा, लिव–इन सम्बन्धों को जानना होगा, इसके लिए जरूरी है कि महिलाएं अपनी सोच को विकसित करते हुए अपने विकास की दिशा व दशा को खुद तय करें । पुरूष प्रधान समाज की भेदभाव करने वाले मानसिकता और नीतियों से मुकाबला करते हुए अपने घर तथा बाहर दोनों को संभाले लेकिन आज महिलाओं ने बड़े परिश्रम के बाद इस समाज में अपनी जगह बना ली है । आधुनिक भारत की नारी अपनी शक्ति तथा सामर्थ्य का परिचय देते हुए बड़ी मजबूती के साथ विकास की ओर आगे बढ़ रही है ।

## निष्कर्ष

संक्षेप में भारतीय हिन्दू नारी के जीवन में मध्यकालीन तथा ब्रिटिश राज्य में उत्पन्न अनेक विषमताएं समाप्त हुई तथा भारतीय समाज में नारी का सम्मान मां, पत्नी, बहिन तथा पुत्री के रूप में बढ़ा । पति का गुरू तथा देवता का स्वरूप समाप्त हुआ तथा पुरूष तथा नारी में दोबारा सखा भाव आया तथा बढ़ा ।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय नारी अतीत से वर्तमान तक डॉ. सतीश चन्द्र मित्तल, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली ।
2. आधी आबादी का यथार्थ, भारतीय नारी डॉ. शारदा अग्रवाल, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
3. नारी के बदलते आयाम : डॉ. राजकुमार, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली ।
4. नारी शिक्षा एवं सशक्तीकरण, चितरंजन ओझा, रीज़ल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली ।
5. स्वतन्त्रता संग्राम और महिलाऐं : विश्वप्रकाश गुप्त, नई दिल्ली ।